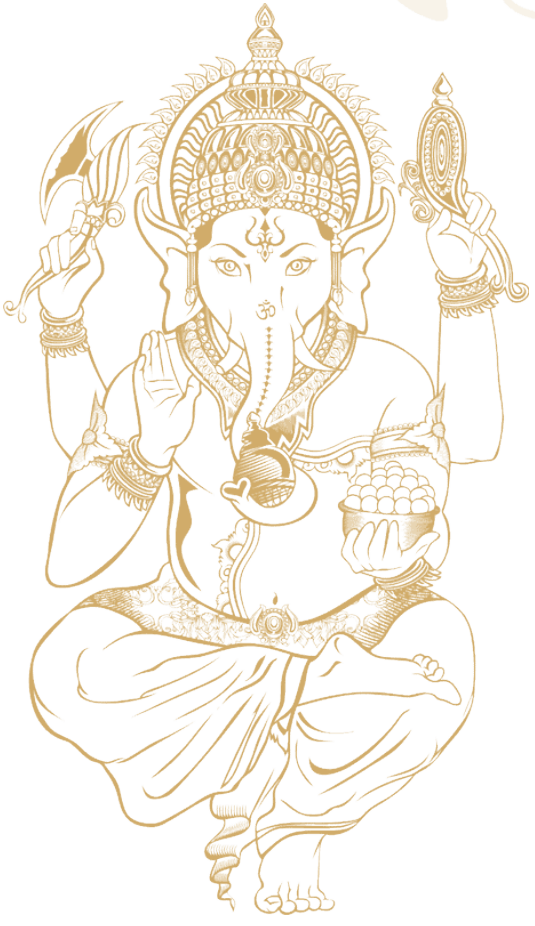

Anshu pandey

10 Jul 1998

11:30 PM

Gonda

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121711001

तिथि 10/07/1998 **समय** 23:30:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Gonda **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:50:04
अक्षांश 27:08:00 उत्तर **रेखांश** 81:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:02:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:41:42 घं
वेलान्तर	00:05:17 घं
सूर्योदय	05:14:53 घं
सूर्यास्त	18:59:43 घं
चैत्रादि संवत	2055
शक संवत	1920
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
योग	विष्कुम्भ
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	जी-जीविका
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	गुरु
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

सूर्य 0वर्ष 11मा 5दि
राहु
15/06/2016
15/06/2034

राहु	26/02/2019
गुरु	22/07/2021
शनि	28/05/2024
बुध	15/12/2026
केतु	03/01/2028
शुक्र	02/01/2031
सूर्य	27/11/2031
चन्द्र	28/05/2033
मंगल	15/06/2034

योगिनी

संकटा 1वर्ष 2मा 27दि
सिद्धा
06/10/2020
07/10/2027

सिद्धा	15/02/2022
संकटा	07/09/2023
मंगला	17/11/2023
पिंगला	07/04/2024
धान्या	06/11/2024
भ्रामरी	17/08/2025
भद्रिका	07/08/2026
उल्का	07/10/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:41:05	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			24:26:30	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.26	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			07:55:48	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	सम राशि	1.24	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			09:07:08	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	गुरु	शत्रु राशि	1.14	मातृ	भ्रातृ	क्षेम
बुध			20:10:48	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	0.99	भ्रातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			04:08:16	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.54	कलत्र	धन	साधक
शुक्र			25:29:56	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	स्वराशि	1.65	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि			08:41:29	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	नीच राशि	1.10	पुत्र	आयु	मित्र
राहु	व		08:16:01	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		08:16:01	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

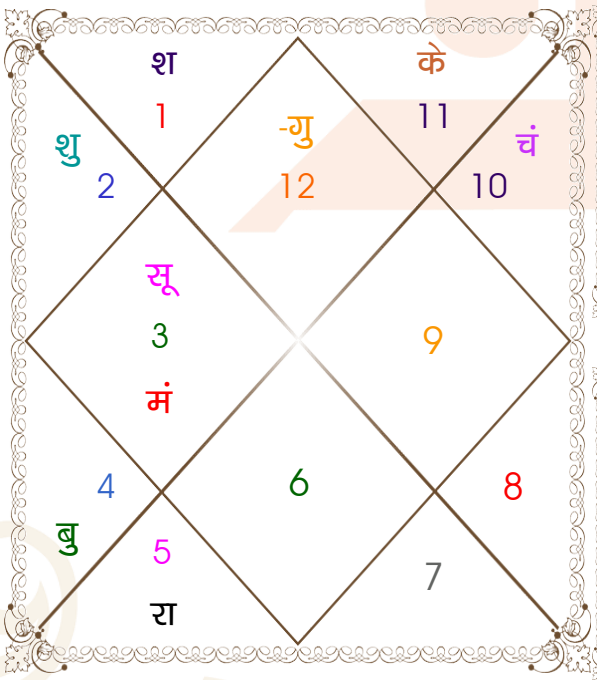

चन्द्र कुंडली

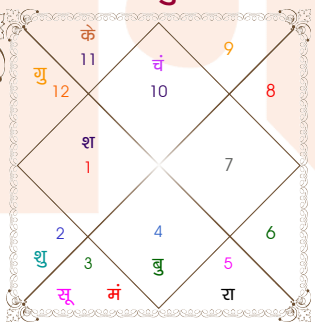

नवमांश कुंडली

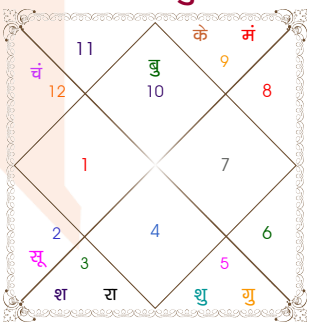

सर्वाष्टकवर्ग

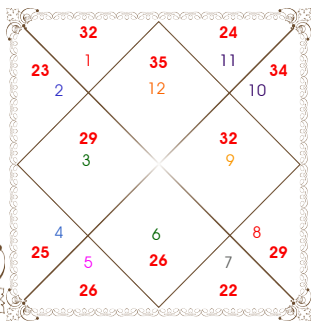

दशमांश कुंडली

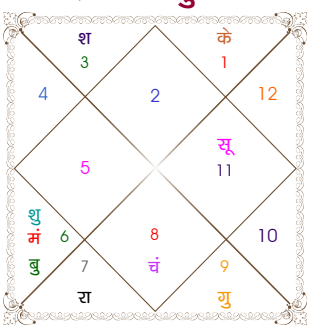

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि नकुल, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग सिंह तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का पहला अक्षर "जी" या "जि" से प्रारम्भ होगा।

आप समाज में एक गणमान्य महिला होंगी तथा सभी सामाजिक जन आपको यथा योग्य आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप हमेशा सत्वगुणों से युक्त होकर अपना सांसारिक व्यवहार निभाएंगी एवं आपात काल में भी किसी भी प्रकार से विचलित न होकर शान्त भाव से उनका सामना करेंगी तथा समाधान करने में भी सक्षम रहेंगी। आपको जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी एवं आनन्दपूर्वक आप इन सबका उपभोग करेंगी। आप एक धनाढ्य महिला रहेंगी तथा धन सम्पति से सुशोभित होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपको विविध शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान भी रहेगा। अतः एक विदुषी के रूप में भी आप ख्याति अर्जित करेंगी एवं विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप सफल एवं समर्थ रहेंगी।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप दूसरे लोगों से हमेशा विनम्र व्यवहार रखेंगी। अतः सभी लोग आपकी विनय शीलता से प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आपके मन में धर्म के प्रति भी निष्ठा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कृत्यों को आप प्रयत्नपूर्वक सम्पन्न करेंगी एवं धर्मानुपालन में नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। समाज में आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी रहेगी एवं किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप उसके उपकार को पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगी तथा उसके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। इसके अतिरिक्त आप समाज में सभी वर्गों के मध्य लोकप्रिय रहेंगी एवं समान रूप से सबको अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका कद दीर्घ एवं स्थूलता से युक्त रहेगा साथ ही आप शौर्य गुण से सम्पन्न होकर साहस एवं निर्भयता से अपने सम्पूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपके सभी

शत्रु आपसे पराजित दौरान आपकी- विरोध करने में अपने आपको वे स्वयं को असहाय सा महसूस करेंगे। साथ ही विवाद या कलह आदि में भी आप प्रायः विजय को प्राप्त करेंगी।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आप स्वभाव से ही दानशीलता की प्रवृति से सुसम्पन्न रहेंगी एवं समय समय पर यथा शक्ति अन्य जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। सत्कार्यों को करने की आपकी नैसर्गिक प्रवृति रहेगी तथा आपके इन सत्कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपसे पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा एवं लोग भी हृदय से आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे। आप धनैश्वर्य से भी प्रायः युक्त रहेंगी। आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुखी रहेगा एवं पुत्र आदि संतति से आप सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता भी आकर्षक रहेगी परन्तु कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति से अन्य लोगों को असन्तुष्ट भी करेंगी।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोळभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी।

आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक कद दीर्घ तथा ललाट विस्तृत रहेगा। आपकी आखें सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में परिश्रम करने से आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी। ठण्ड से आप अत्याधिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगी तथा इसको सहन करने में असमर्थ सी रहेंगी। सत्य का अनुपालन करने के लिए आप जीवन में सर्वदा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगी एवं प्रयत्न पूर्वक इसका भी अनुपालन करेंगी परन्तु इसमें बाह्य प्रदर्शन की भी प्रमुखता रहेगी। आपका सामाजिक जीवन सम्मान पूर्वक व्यतीत होगा तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन अन्य जनों के समक्ष करेंगी। साथ ही अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के प्रति आपके मन में आकर्षण भी रहेगा एवं उन्हीं से आपके अधिकांश मित्रतापूर्ण संबंध भी रहेंगे। लेखन कार्य में रूचि होने के कारण आप कविता सृजन में सफलता अर्जित कर सकेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति लोलुपता से भी युक्त रहेगी।

गीतज्ञः शीतभीरुः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने परिवार के भरण पोषण में सर्वदा व्यस्त रहेंगी तथा अधिकांश परिवारिक समस्याओं में ही उलझी रहेंगी। आप दूसरे लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही उस पर आचरण करने के लिए भी उद्यत होगी। इससे आप कभी कभी कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। आप में आलस्य का भाव भी कभी कभी प्रबल रूप में उत्पन्न होगा। परन्तु आप एक भाग्यशाली महिला होंगी जिससे आपके कई महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से स्वतः ही भाग्यबल से सिद्ध हो जाएंगे। यात्रा एवं भ्रमण में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अधिकांश समय इन में ही व्यतीत करेंगी। आप में शारीरिक बल मध्यम रूप से रहेगा तथा साहसी प्रवृति होने के कारण अगम्य स्थानों एवं कठिन कार्यों को करने की ओर आपकी विशेष रूचि तथा प्रकृति रहेगी। कभी कभी आप में दया एवं करूणा के भाव का अभाव भी दृष्टिगोचर होगा। इसके अतिरिक्त वातोत्पन्न रोगों से आप जीवन में कई बार कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा सर्वदा सत्वगुणों से सुसम्पन्न रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।

लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

आपको परिवारिक सम्मान सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा परन्तु कुल परम्परा तथा मर्यादा का अभिवर्द्धन एवं पालन करने में आप सर्वदा तत्पर तथा प्रयत्न शील रहेंगी। आपका अपने पति पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार एवं निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में आप सफल होंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। सुन्दर एवं भद्रपुरूषों के द्वारा नित्य आपकी प्रशंसा की जाएगी। माता के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा पुत्रादि सन्तानों से आप सुसम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। अतः उनके द्वारा आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। धन वैभव का भी आपके पास अभाव नही रहेगा। साथ ही नैसर्गिक रूप से त्याग की भावना आप में विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का भी आप अनुपालन करेंगी। आपके सेवक गण सुन्दर एवं गुणवान रहेंगे एवं आदर पूर्वक आपकी सेवा करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप का परिवार भी विस्तृत होगा। आप सुख को प्राप्त करने के लिए नित्य चिन्तित सी रहेंगी एवं उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न भी करती रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या किसी संबंधी की धन सम्पत्ति को अपने जीवन में प्राप्त करेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। अन्य जनों की भलाई के लिए आप सतत चिन्ताशील रहेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक उनके कल्याण कारी कार्यों को करती रहेंगी। साथ ही सलाह अथवा मंत्रणा आदि कार्यों में भी आप दक्ष रहेंगी। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगी तथा हमेशा उनको सहयोग प्रदान करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में शौर्यगुण की भी प्रधानता रहेगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

आप संगीत शास्त्र की अच्छी ज्ञाता होंगी एवं इस क्षेत्र में विशेष योग्यता सफलता तथा ख्याति अर्जित करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगी। आपका सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप एक धार्मिक महिला होंगी एवं ऐवता तथा ब्राहमणों के प्रति अपने मन में विशेष श्रद्धाभाव रखेंगी एवं समय समय पर उनकी पूजा एवं सेवा कार्य भी सम्पन्न करती रहेंगी। आपकी अभिमानी प्रवृति भी रहेंगी जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा इस प्रवृति का भी आप जीवन में अनुपालन करती रहेंगी। आप में शारीरिक बल भी पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा। आप नाना प्रकार की कलाओं तथा कार्यो को करने में निपुणता को प्राप्त करेंगी तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन भी करेंगी। अतः समाज के मध्य एक विदुषी के रूप में प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी प्राप्त करेंगी। शरीर आपका कान्तिमय होगा एवं परिवार के अतिरिक्त कई अन्य लोग भी आपसे सुख प्राप्त कर सकेंगे।

आपकी आंखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी। जीवन में आपको धन एवं सम्मान का कभी भी अभाव नहीं रहेगा तथा सर्वप्रकार के वैभव से युक्त होकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। निशाने बाजी की कला में आप दक्षता प्राप्त करेंगी एवं इस क्षेत्र में प्रसिद्ध भी रहेंगी। शरीर से आप गौरवर्ण की रहेंगी एवं नगरवासियों को आप पूर्ण रूप से वश में रखेंगी अर्थात् नगर की कोई प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में पैदा होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से परोपकारी होंगी एवं दक्षतापूर्वक अन्य लोगों की भलाई के कार्यो को करने में सक्षम रहेंगी। आपके इन कार्यो के द्वारा सभी सामाजिक जन आपको हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप विपुल धन की स्वामिनी बनकर अन्य धनाढ्य लोगों के द्वारा भी आदरणीया रहेंगी। आप कई शास्त्रों की ज्ञाता होकर उच्चकोटि की विदुषी होंगी। तथा कई अन्य संस्थाओं की प्रमुख या संचालिका भी हो सकेंगी। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आप भी उनका हादिक मान सम्मान एवं सहयोग करेंगी।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे समान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए वैसाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र,

वैधृतियोग, शकुनिकरण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, वैधृतियोग, शकुनिकरण तथा रोहिणी नक्षत्र में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु लोहा, कम्बल, तिल, तेल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।